पहले पेज से जारी...

राहुल बनेंगे प्रधानमंत्री ?

वरूण को भाजपा न निगल पा रही है और न उगल पा रही है. खुद वरूण भी अपने कहे पर कायम नहीं रह पा रहे हैं कभी वे सीडी से छेड़छाड़ की बात करते हैं तो कभी हाथ काटने के बयान से ही मुकर जाते हैं. इस तरह भाजपा जिसे मुकाबले में लाना चाहती थी उनका गांधी परिवार का वंशज पहली परीक्षा में ही फेल हो गया है.

हालांकि राहुल के लिये सोनिया गांधी ने धीरजता से कहा है कि अभी राहुल परिपक्व नहीं हुआ है उसे देश को समझना और जानना है, कांग्रेसियों को भले ही निराश करे मगर देश की जनता के सामने एक बार फिर त्याग की भावना प्रदर्शित कर रहा है और इससे कांग्रेस खासकर गांधी परिवार के प्रति विश्वास की भावना प्रबल हुई है. भले ही इस चुनाव के बाद मनमोहनसिंह प्रधानमंत्री बन जाए मगर वे केवल गांधी परिवार के अर्दली की भूमिका में है. उनका न तो देश व्यापी जनाधार है न ही कोई बड़ी महत्वाकांक्षा वे कांग्रेस के स्थापित राजनेता भी नहीं है. सो वे प्रधानमंत्री तब तक ही है जबतक 10 जनपथ चाहेगा. जिस सोनिया गांधी को लगेगा की अब माहौल राहुल के पक्ष में हो गया है उसी वक्त एक फरमान निकलेगा और मनमोहन प्रधानमंत्री की कुर्सी से हटा दिये जायेंगे तथा राहुल को वहां स्थापित कर दिया जाएगा. मनमोहन न तो सीताराम केसरी है और न ही नरसिंहाराव जिनकी देश में कहीं जमीन हो या कोई बड़ी महत्वाकांक्षा. कांग्रेस आलाकमान ने प्रणव मुखर्जी से लेकर अर्जुनसिंह तक को किनारे कर मनमोहन को प्रधानमंत्री के रूप में चयनीत किया ताकि भविष्य की रणनीति को लागू करने में वे मुफीद रहे. चाहे जब उन्हें हटाया जा सके और राहुल को स्थापित किया जा सके. इसलिये यह तय है कि इस चुनाव में कांग्रेस के प्रधानमंत्री भले ही मनमोहन सिंह हो अगले चुनाव के उसके वेटिंग इन पीएम राहुल गांधी ही है.

10 जनपथ और सोनिया गांधी ने जहां राहुल को प्रोजेक्ट करने की पूरी रणनीति बना ली है हीं स्वयं राहुल भी भविष्य की रणनीति के तहत काम कर रहे हैं वे कांग्रेस के भीतर युवा नेताओं का एक ऐसा समूह तैयार करने की रणनीति पर काम कर रहे है जो केवल उनके प्रति वफादार रहे और मौका आने पर दमदारी से कांग्रेस में उनके समर्थन में खड़ा रहे. राहुल गांधी की इस रणनीति ने कांग्रेस में दूसरी पंक्ति के युवा नेतृत्व की एक लम्बी फौज खड़ी कर दी है. उनकी टीम में ज्योतिरादित्य सिंधिया, सचिव पायलट, जतिन प्रसाद, नवीन जिंदल, मिलिंद देवड़ा, रणजीत सिंह हुड्डा, संदीप दीक्षित कु. शैलजा सहित कई नाम है. जो न केवल जमीनी नेता है बल्कि अलग अलग प्रदेशों से अपना अच्छा जनाधार रखते है. इस टीम के बलबूते पर राहुल गांधी देश में एक ऐसा माहौल बनाना चाहते है जिससे देश का दस करोड़ युवा मतदाता खुद कहने लगे की अब प्रधानमंत्री के रूप में राहुल ही चाहिए आर आने वाले समय में यह होगा, कांग्रेस की रणनीति तो यहीं है.

कांग्रेस ने भेजा मोदी को नोटिस

भोपाल। प्रदेश कांग्रेस कमेटी विधि एवं मानव अधिकार विभाग ने गुजरात के मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी को नोटिस भेजा है। जिसमें उनसे कांग्रेस को सवा सौ साल पुरानी बुढ़िया वाले अपने बयान पर पंद्रह दिन में माफी मांगने को कहा गया है। विभाग के प्रदेश महासचिव अधिवक्ता संजय गुप्ता ने नोटिस में कहा कि यदि श्री मोदी ने माफी नहीं मांगी तो वे उनके खिलाफ भारतीय दंड विधान की धारा 500 एवं 171 के तहत एवं लोक प्रतिनिधि अधिनियम 1951 की धारा 125 के तहत कार्रवाई करने अदालत का दरवाजा खटखटाएंगे। उन्होंने कहा कि श्री मोदी के इस बयान से स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों और वृद्धजनों का अपमान हुआ है। इस बयान से उन्होंने कांग्रेसजनों की मानहानि की है।

पहले पेज से जारी...

अब आडवाणी पर खड़ाऊं

अमेरिका से प्रतिद्वंद्विता पर उतारू कुछ देश भी मन ही मन खुश हुए होंगे। लीजिए, उसके बाद चीनी प्रधानमंत्री की ओर जूता फेंके जाने की घटना हो गई। लोग हैरान है कि आखिर हो क्या रहा है। जूता फेंक कुसंस्कृति का भारत में संक्रमण गृहमंत्री पी.

चिदम्बरम की पत्रकार वार्ता के दौरान सामने आया। एक पत्रकार ने अपना जूता चिदम्बरम की ओर फेंका। चिदम्बरम जूता प्रहार से बाल- बाल बच गए। उन्होंने पत्रकार को माफ भी कर दिया। सवाल उठता है कि चिदम्बरम जैसा भला इंसान एक पत्रकार के ऐसे व्यवहार से कितना अधिक आहत हुआ होगा। इस जूता प्रकरण पर कांग्रेस विरोधी कतिपय दलों ने कांग्रेस को ही कोसा। ऐसे - ऐसे तर्क दिए गए कि सुनकर लोगों ने दांतों तले अंगुली दबा ली होगी। फिर हरियाणा में कांग्रेस के युवा सांसद नवीन जिन्दल पर चप्पल फेंकने की घटना हो गई। राजनीतिक और मीडिया बिरादरी के कतिपय अत्यधिक भले लोगों ने ऐसा प्रचारित किया मानों देश की सबसे पुरानी पार्टी ऐसे ही व्यवहार के लायक है। जबकि ऐसे मामले किसी की उसकी अपनी सनक के परिणाम थे। अब क्या कहेंगे? आडवाणी की ओर खड़ाऊं फेंक दी गई। भाजपा की ओर से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के साथ ऐसा व्यवहार? चिदम्बरम के साथ हुए व्यवहार को सही नहीं माना जा सकता है। वही बात आडवाणी के साथ हुई घटना के लिए लागू होगी। इसे लोगों में बढ़ रही नाराजगी, अविश्वास और कुण्ठा निरूपित कर दोषियों का बचाव भी नहीं किया जाना चाहिए। यह प्रमाण है इस बात का कि किस तरह हमारे जीवन में अनुशासनहीनता, उजड्डपन और असभ्यता के कीटाणु फैलते जा रहे हैं। दरअसल, इस तरह की घटनाओं के लिए कुछ हद तक वे लोग जिम्मेदार है जो कानून के उल्लंघन और अनुशासनहीनता को संरक्षण देते थे। देश में सरकारी अधिकारियों और पुलिस कर्मियों के साथ खुले आम दुर्व्यवहार और उनके मानमर्दन की हजारों घटनाएं पिछले 6 दशकों में हो चुकी हैं। हर जगह नेता नामक प्राणी की भूमिका दिखाई देती रही। अब वह बीमारी विकराल रूप लेती जा रही है। समझ में नहीं आ रहा कि आगे क्या-क्या देखना और भोगना लिखा है। आडवाणी के साथ हुए व्यवहार से काफी कुछ सोचने पर विवश होना पड़ रहा है। उन पर खड़ाऊं फेंकने वाला अगर मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति है, तब प्रश्न यह है कि वह बाहर क्यों घूम रहा था। उसे पागलखाने में रखा जाना चाहिए। फिर भी इस घटना को खतरे की घण्टी के रूप में ली जानी चाहिए।

सोचो जरा क्यों न गांधी जैसा हो जाएं?

चुनाव-चक्रम
सुरेन्द्र बंसल

चुनाव के चक्रम में इस बार सबसे अधिक मुद्दे की बात कही है तो लालकृष्ण आड़वाणी ने कही है. स्विस बैंकों में जमा भारतीयों का काला धन विकास के लिए भारत लाना चाहिए. पता नहीं क्यों प्रणव मुखर्जी ने काला धन पर दिए आड़वाणी के तथ्यों को नकार दिया. हो सकता है प्रणव मुखर्जी के पास ऐसे तथ्य हों जो आड़वाणी के दिए तथ्यों से मेल नहीं होते हों.फिर भी भारतीयों का ऐसा पैसा जो भारतीय बैंकों में नही अनधिकृत रुप से किसी विदेशी बैंक में हो तो इतना तो है कि वह कुल रकम कम नहीं होगी.

प्रणव बाबू शायद यूपीए के भोले भाले मंत्री हैं और यूपीए के पीएम इन वेटिंग भी हैं इसलिए उन्होंने ज्यादा दूर की सोच तो रखी पर ज्यादा दूर की दृष्टि नहीं रखी. वे ज्यादा दूर की सोच में उन खतरों को देख रहें होंगे जिसमें जाने-पहचाने चेहरे ज्यादा होगे. जाहिर है ऐसे में खतरे तो बढ़ जांएगें आड़वाणी ने इन खतरों को उठाया है और यह भी कहा है कि इसमें अगर किसी भाजपा से जुड़े व्यक्ति का धन होगा तो उसके साथ भी वही होगा जो दूसरों के साथ होगा.

बाबा रामदेव भी इस मामलें आड़वाणी के साथ हैं उन्होंने खुलकर बेबाक कहा है कि ऐसा धन जो काले तरीके से देश के बाहर गया हो उसे वापस लाकर देश के आवश्यक हित साधना चाहिए.एक बात और बाबा ने कही कि यह मामला आड़वाणी ने उठाया है तो यह मान लेना चाहिए उनका या उनके लोगों का धन इसमें नहीं है और यह एक अच्छी बात है. बाबा ने ठीक ही सोचा है लेकिन यह सोच एक ईमानदार व्यक्ति ,पार्टी और संगठन सभी को जाहिर करना चाहिए. इसलिए भी कि अगर वह अपने को एक निष्ठ राष्ट्र भक्त और सामाजिक दायित्व के प्रति सजग मानता है.लेकिन ऐसा इसलिए भी कि चुनाव चक्रम में बहुतों ने और बड़े- बड़ों ने आपा खोया है और वह भी फिजूल की असभ्य बातों में. ये बातें मुंहजोरी तक पहुंची और सोनिया, प्रियंका, मुलायमसिंह, मायावती, अमरसिंह, उद्धव ठाकरे, राज ठाकरे, मनमोहनसिंह, लालू-राबडी यादव , रामविलास पासवान, नीतीशकुमार, सीताराम येचुरी, समेत तमाम नेताओं की जुंबा पर काले धन पर कोई साफगोई बात नहीं आई. इसलिए प्रणव मुखर्जी की कुछ तारीफ की जाना चाहिये कि कम से कम उन्होंने आड़वाणी के साथ इस मुद्दे को संज्ञान में लिया और अपना पक्ष रखा.यह नैतिक साहस होना चाहिए कि आप कह सके कि उनका किसी भी तरह से किसी भी तरह का अवैध धन देश के बाहर भीतर कहीं भी परोक्ष-अपरोक्ष रुप से नहीं है. ऐसा दायित्व पूर्ण साहस दिखाने वाला व्यक्ति ही निष्कलंक, निष्कपट और निर्विकार हो सकता है अब भी समय है स्वयं को ऐसे मौकों पर इस तरह जाहिर करने का कि आपकी छबि दूसरों से भिन्न और साफ दिखे.

चुनाव चक्रम में गांधीगिरी नजर नही आई और उलट इसके हर नेता दादागिरी की भाषा में गिरता हुआ नजर आया. दरअसल गांधीगिरी से बढ़कर गांधी हो जाना है, आज किस नेता में दम है कि वह गांधी नही तो कुछ गांधी जैसा हो जाए . राजनीति में जो गांधीगिरी नहीं कर सकते वे गांधी जैसे न बन सकते है और न उनका दर्शन, चिंतन गांधी जैसा हो सकता है लेकिन यही आज की जरुरत है. सोचो जरा क्यों न गांधी जैसा हो जाएं?

स्वामी मुद्रक प्रकाशक एवं संपादक उत्तम झंवर द्वारा मे. मोर्या आर्ट प्रा.लि. के लिये अपनी दुनिया प्रिन्टर्स १३, प्रेस काम्पलेक्स एबी रोड इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं ३०५ मोर्या आर्केड १/२ ओल्ड पलासिया, इंदौर में प्रकाशित फोन : ४०४१२६८